सन्धि

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सन्धि की परिभाषा और प्रकार

प्रश्न 1 (आसान). हिम + आलयः = ?

उत्तर – हिमालयः

प्रश्न 2 (आसान). नर + इन्द्रः = ?

उत्तर – नरेन्द्रः

प्रश्न 3 (मध्यम). कवि + ईशः = ?

उत्तर – कवीशः

प्रश्न 4 (कठिन). पितृ + ऋणम् = ?

उत्तर – पितृणम्

» स्वर सन्धि (अच् सन्धि) - परिचय

प्रश्न 5 (आसान). 'कवि + इन्द्रः' में कौन सी सन्धि होगी?

उत्तर – स्वर सन्धि

प्रश्न 6 (आसान). अगर 'उप + इन्द्रः' है, तो ये किस सन्धि का उदाहरण है?

उत्तर – स्वर सन्धि

प्रश्न 7 (मध्यम). 'महा + ईशः' में कौन सी सन्धि है और क्या बनेगा?

उत्तर – स्वर सन्धि, 'महेशः'

प्रश्न 8 (कठिन). स्वर सन्धि में कितने मुख्य भेद होते हैं, नाम बताओ?

उत्तर – सात मुख्य भेद: दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण, अयादि, पूर्वरूप, प्रकृतिभाव।

» दीर्घ सन्धि

प्रश्न 9 (आसान). विद्या + अर्थी = ?

उत्तर – विद्यार्थी

प्रश्न 10 (आसान). भानु + उदयः = ?

उत्तर – भानूदयः

प्रश्न 11 (मध्यम). नदी + ईशः = ?

उत्तर – नदीशः

प्रश्न 12 (कठिन). पितृ + ऋणम् = ?

उत्तर – पितृणम्

» गुण सन्धि

प्रश्न 13 (आसान). नर + ईशः = ?
उत्तर – नरेशः

प्रश्न 14 (आसान). सूर्य + उदयः = ?
उत्तर – सूर्योदयः

प्रश्न 15 (मध्यम). राज + ऋषि = ?
उत्तर – राजर्षिः

प्रश्न 16 (कठिन). हितोपदेशः का सन्धि विच्छेद करो।
उत्तर – हित + उपदेशः

» वृद्धि सन्धि

प्रश्न 17 (आसान). तव + एव = ?
उत्तर – तवैव

प्रश्न 18 (आसान). जल + ओघः = ?
उत्तर – जलौघः

प्रश्न 19 (मध्यम). देव + ऐश्वर्यम् = ?
उत्तर – देवैश्वर्यम्

प्रश्न 20 (कठिन). विद्या + औचित्यम् = ?
उत्तर – विद्यौचित्यम्

» यण् सन्धि

प्रश्न 21 (आसान). प्रति + एकम्
उत्तर – प्रत्येकम्

प्रश्न 22 (आसान). अनु + अयः
उत्तर – अन्वयः

प्रश्न 23 (मध्यम). नदी + आवेगः
उत्तर – नद्यावेगः

प्रश्न 24 (कठिन). पितृ + आदेशः
उत्तर – पित्रादेशः

» अयादि सन्धि

प्रश्न 25 (आसान). शे + अनम् = ?
उत्तर – शयनम्

प्रश्न 26 (आसान). भो + अनम् = ?
उत्तर – भवनम्

प्रश्न 27 (मध्यम). पौ + अकः = ?
उत्तर – पावकः

प्रश्न 28 (कठिन). नौ + इकः = ?
उत्तर – नाविकः

» पूर्वरूप सन्धि

प्रश्न 29 (आसान). प्रभो + अहम् की सन्धि कीजिए।
उत्तर – प्रभोऽहम्

प्रश्न 30 (आसान). ग्रामे + अस्मिन् की सन्धि कीजिए।
उत्तर – ग्रामेऽस्मिन्

प्रश्न 31 (मध्यम). को + अयम् की सन्धि कीजिए।
उत्तर – कोऽयम्

प्रश्न 32 (कठिन). सरोवरे + अस्ति की सन्धि कीजिए।
उत्तर – सरोवरेऽस्ति

» प्रकृतिभाव सन्धि

प्रश्न 33 (आसान). बालिके + आगच्छतः
उत्तर – बालिके आगच्छतः

प्रश्न 34 (आसान). मुनी + एतौ
उत्तर – मुनी एतौ

प्रश्न 35 (मध्यम). अमी + ईशाः
उत्तर – अमी ईशाः

प्रश्न 36 (कठिन). एहि कृष्ण३ अत्र गौश्चरति
उत्तर – एहि कृष्ण३ अत्र गौश्चरति (यहाँ 'कृष्ण' का 'अ' प्लुत है, इसलिए प्रकृतिभाव)

» पररूप सन्धि

प्रश्न 37 (आसान). प्र + एष्यति
उत्तर – प्रेष्यति

प्रश्न 38 (आसान). उप + एजति
उत्तर – उपेजति

प्रश्न 39 (मध्यम). अव + एहि
उत्तर – अवेहि

प्रश्न 40 (कठिन). अधि + एष्यते
उत्तर – अध्येष्यते (यह पररूप का उदाहरण नहीं, यण् सन्धि का है।)

» व्यंजन सन्धि (हल् सन्धि) - परिचय

प्रश्न 41 (आसान). सत् + आनंदः
उत्तर – सदानंदः

प्रश्न 42 (आसान). दिक् + गजः
उत्तर – दिग्गजः

प्रश्न 43 (मध्यम). अच् + अंतः
उत्तर – अजंतः

प्रश्न 44 (कठिन). सुप् + अंतः
उत्तर – सुबंतः

» श्चुत्व सन्धि

प्रश्न 45 (आसान). मनस् + चलति
उत्तर – मनश्चलति

प्रश्न 46 (आसान). सत् + चित्
उत्तर – सच्चित्

प्रश्न 47 (मध्यम). जगत् + जननी
उत्तर – जगज्जननी

प्रश्न 48 (कठिन). उत् + ज्वलम्
उत्तर – उज्ज्वलम्

» ष्टुत्व सन्धि

प्रश्न 49 (आसान). तत् + टीका
उत्तर – तट्टीका

प्रश्न 50 (आसान). हरिस् + टीकते
उत्तर – हरिष्टीकते

प्रश्न 51 (मध्यम). आकृष् + तः
उत्तर – आकृष्टः

प्रश्न 52 (कठिन). धनुष् + टंकारः
उत्तर – धनुष्टंकारः

» जश्त्व सन्धि

प्रश्न 53 (आसान). जगत् + ईश:
उत्तर – जगदीश:

प्रश्न 54 (आसान). सुप् + अन्त:
उत्तर – सुबन्त:

प्रश्न 55 (मध्यम). अच् + अन्त:
उत्तर – अजन्त:

प्रश्न 56 (कठिन). दिक् + गज:
उत्तर – दिग्गज:

» चर्त्व सन्धि

प्रश्न 57 (आसान). दिक् + पालः
उत्तर – दिक्पालः

प्रश्न 58 (आसान). युद्ध् + सः
उत्तर – युत्तः

प्रश्न 59 (मध्यम). आपद् + कालः

उत्तर – आपत्कालः

प्रश्न 60 (कठिन). क्षुधम् + पिपासा

उत्तर – क्षुत्पिपासा

» अनुस्वार सन्धि

प्रश्न 61 (आसान). फलम् + खादति

उत्तर – फलं खादति

प्रश्न 62 (आसान). गृहम् + गच्छति

उत्तर – गृहं गच्छति

प्रश्न 63 (मध्यम). सत्यम् + वद

उत्तर – सत्यं वद

प्रश्न 64 (कठिन). धर्मम् + चर

उत्तर – धर्मं चर

» परसवर्ण सन्धि

प्रश्न 65 (आसान). सं + चयः

उत्तर – सञ्चयः

प्रश्न 66 (आसान). पं + डितः

उत्तर – पण्डितः

प्रश्न 67 (मध्यम). गं + गा

उत्तर – गङ्गा

» लत्व सन्धि

प्रश्न 68 (आसान). उत् + लेखः

उत्तर – उल्लेखः

प्रश्न 69 (आसान). तत् + लीनः

उत्तर – तल्लीनः

प्रश्न 70 (मध्यम). महान् + लाभः

उत्तर – महँल्लाभः

प्रश्न 71 (कठिन). उत् + लिखितम्

उत्तर – उल्लिखितम्

» छत्व सन्धि और 'च्' का आगम

प्रश्न 72 (आसान). अनु + छेद:

उत्तर – अनुच्छेद:

प्रश्न 73 (आसान). वि + छेद:

उत्तर – विच्छेद:

प्रश्न 74 (मध्यम). तत् + श्रुत्वा
उत्तर – तच्छ्रुत्वा

प्रश्न 75 (कठिन). स्व + छंदम्
उत्तर – स्वच्छंदम्

» 'र्' का लोप और पूर्व स्वर का दीर्घ होना

प्रश्न 76 (आसान). दूर + रम्यम्
उत्तर – दूरम्यम्

प्रश्न 77 (आसान). हरिर् + रमेश:
उत्तर – हरी रमेश:

प्रश्न 78 (मध्यम). निर् + रक्षणम्
उत्तर – नीरक्षणम्

प्रश्न 79 (कठिन). प्रभुर + राजते
उत्तर – प्रभू राजते

» 'न्' का 'ण्' होना (णत्व विधि)

प्रश्न 80 (आसान). कृष् + नः = ?
उत्तर – कृष्णः

प्रश्न 81 (आसान). भर + अनम् = ?
उत्तर – भरणम्

प्रश्न 82 (मध्यम). विष् + नुः = ?
उत्तर – विष्णुः

प्रश्न 83 (कठिन). प्रा + अं + नयति = ?
उत्तर – प्रानयति (यहाँ 'अं' अट् में नहीं है, इसलिए न नहीं बदलेगा)

» विसर्ग सन्धि - परिचय

प्रश्न 84 (आसान). मनः + हरः = ?
उत्तर – मनोहरः

प्रश्न 85 (आसान). निः + चयः = ?
उत्तर – निश्चयः

प्रश्न 86 (मध्यम). धनुः + टंकारः = ?
उत्तर – धनुष्टंकारः

प्रश्न 87 (कठिन). कः + अपि = ?
उत्तर – कोऽपि

» सत्व सन्धि (विसर्ग का 'स्', 'श्', 'ष्' होना)

प्रश्न 88 (आसान). नमः + ते = ?
उत्तर – नमस्ते

प्रश्न 89 (आसान). निः + फलः = ?
उत्तर – निष्फलः

प्रश्न 90 (मध्यम). बालकः + तरति = ?
उत्तर – बालकस्तरति

प्रश्न 91 (कठिन). धनुः + टंकारः = ?
उत्तर – धनुष्टंकारः

» षत्व सन्धि

प्रश्न 92 (आसान). निः + फलः
उत्तर – निष्फलः

प्रश्न 93 (आसान). दुः + करम्
उत्तर – दुष्करम्

प्रश्न 94 (मध्यम). पुरः + कारः
उत्तर – पुरस्कारः

प्रश्न 95 (कठिन). निः + प्रेष्यः
उत्तर – निष्प्रेष्यः

» विसर्ग का रुत्व-उत्त्व-गुण-पूर्वरूप (ओ-भाव)

प्रश्न 96 (आसान). रामः + अयम्
उत्तर – रामोऽयम्

प्रश्न 97 (आसान). नरः + अवदत्
उत्तर – नरोऽवदत्

प्रश्न 98 (मध्यम). मनः + हरः
उत्तर – मनोहरः

प्रश्न 99 (कठिन). यशः + दा
उत्तर – यशोदा

» रुत्व सन्धि (विसर्ग का 'र्' होना)

प्रश्न 100 (आसान). मुनिः + एषः
उत्तर – मुनिरेषः

प्रश्न 101 (आसान). गुरुः + वदति
उत्तर – गुरुर्वदति

प्रश्न 102 (मध्यम). भानुः + उदयः
उत्तर – भानूरुदयः

प्रश्न 103 (कठिन). पितुः + इच्छा
उत्तर – पितुरिच्छा

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. यह बताओ, 'महा' + 'ईशः' मिलकर क्या बनेगा?

› सबसे पहले हमें देखना है कि 'महा' शब्द का आखिरी वर्ण क्या है? 'हा' में 'आ' की ध्वनि है।
› और 'ईशः' का पहला वर्ण क्या है? 'ई'।
› अब हमें देखना है कि 'आ' और 'ई' के मिलने से क्या परिवर्तन होता है।
› नियम के अनुसार, 'आ' और 'ई' मिलकर 'ए' बन जाते हैं।
› तो 'महा' का 'आ' और 'ईशः' का 'ई' मिलकर 'ए' बन गया।
› अब 'म्' + 'ह' + 'ए' + 'शः' = 'महेशः'।

उत्तर – महा + ईशः = महेशः

उदाहरण 2. शब्द 'विद्या + अर्थी' में कौन सी सन्धि है और इसका सन्धि पद क्या बनेगा?

› सबसे पहले, 'विद्या' शब्द का अंतिम वर्ण पहचानो - यह 'आ' (एक स्वर) है।
› फिर, 'अर्थी' शब्द का पहला वर्ण पहचानो - यह 'अ' (एक स्वर) है।
› क्योंकि यहाँ दो स्वर ('आ' और 'अ') आपस में मिल रहे हैं, यह स्वर सन्धि का उदाहरण है।
› स्वर सन्धि के नियमों के अनुसार, 'आ' और 'अ' मिलकर 'आ' ही बनाते हैं (दीर्घ सन्धि)।
› अतः, सन्धि पद 'विद्यार्थी' बनेगा।

उत्तर – यह स्वर सन्धि है और इसका सन्धि पद 'विद्यार्थी' बनेगा।

उदाहरण 3. शब्द 'गिरि + इन्द्रः' की सन्धि कीजिए।

› पहला शब्द है 'गिरि'। इसके अंत में 'इ' स्वर है (ह्रस्व 'इ' की मात्रा)।
› दूसरा शब्द है 'इन्द्रः'। इसकी शुरुआत में 'इ' स्वर है (ह्रस्व 'इ' स्वर)।
› नियम कहता है कि जब ह्रस्व 'इ' के बाद ह्रस्व 'इ' आए, तो वे मिलकर दीर्घ 'ई' बन जाते हैं।
› तो, 'गिरि' का 'इ' और 'इन्द्रः' का 'इ' मिलकर 'ई' बन गए।
› अब 'गिरि' में से 'इ' हटा दो तो 'गिर्' बचेगा। इसमें नया 'ई' जोड़ो।
› और 'इन्द्रः' में से 'इ' हटा दो तो 'न्द्रः' बचेगा।
› इन सबको जोड़ने पर बनता है 'गिरीन्द्रः'।
› देखो, 'इ' की मात्रा अब 'ई' की मात्रा में बदल गई है।
› सही शब्द है 'गिरीन्द्रः'।

उत्तर – गिरीन्द्रः

उदाहरण 4. शब्द 'महोत्सवः' का सन्धि विच्छेद करके गुण सन्धि का नियम बताओ।

› पहला चरण: शब्द को ध्यान से देखो– 'महोत्सवः'। इसमें 'ओ' की मात्रा दिख रही है।
› दूसरा चरण: हमें पता है कि 'ओ' की मात्रा तब बनती है जब 'अ/आ' के बाद 'उ/ऊ' आता है।
› तीसरा चरण: अब शब्द को अलग करके देखो। 'महा' और 'उत्सवः' में 'महा' का 'आ' और 'उत्सवः' का 'उ' मिलकर 'ओ' बन रहे हैं।
› चौथा चरण: तो, सन्धि विच्छेद होगा 'महा + उत्सवः'।

उत्तर – महा + उत्सवः (गुण सन्धि)

उदाहरण 5. 'सदा + एव' का सन्धि विच्छेद करके सन्धि का नाम बताओ।

› पहला शब्द है 'सदा', इसका अंतिम स्वर 'आ' है।
› दूसरा शब्द है 'एव', इसका पहला स्वर 'ए' है।
› नियम कहता है कि 'आ' + 'ए' = 'ऐ' होगा।
› तो 'सदा' का 'आ' और 'एव' का 'ए' मिलकर 'ऐ' बन जाएंगे।
› शब्द बनेगा 'सद + ऐ + व' = 'सदैव'।
› यह वृद्धि सन्धि का उदाहरण है क्योंकि 'आ' के बाद 'ए' आने पर 'ऐ' बना।

उत्तर – सदा + एव = सदैव (वृद्धि सन्धि)

उदाहरण 6. 'सु' + 'आगतम्' की सन्धि करें।

› पहला शब्द है 'सु', इसका अंतिम वर्ण है 'उ'।

› दूसरा शब्द है 'आगतम्', इसका पहला वर्ण है 'आ'।

› 'उ' के बाद 'आ' आया है, जो 'उ' से 'असमान स्वर' है।

› यण् सन्धि के नियम के अनुसार, 'उ' बदल कर 'व्' बन जाएगा।

› तो 'स्' आधा रह जाएगा, 'उ' की जगह 'व्' आएगा, और 'व्' में 'आ' जुड़ जाएगा।

› इससे बनेगा 'स् + व् + आ + गतम्' = 'स्वागतम्'।

› सही शब्द है 'स्वागतम्'।

› तो बच्चों, जब हम किसी को 'स्वागतम्' कहते हैं, तो दरअसल हम एक यण् सन्धि का ही उदाहरण बोल रहे होते हैं!

उत्तर – स्वागतम्

उदाहरण 7. शब्द 'नायकः' का सन्धि विच्छेद करके अयादि सन्धि का नियम समझाइए।

› पहचानो: शब्द में 'आय' की ध्वनि है, जो बताती है कि यह अयादि सन्धि हो सकती है।

› नियम लागू करो: 'आय' का मतलब है कि मूल स्वर 'ऐ' रहा होगा।

› विच्छेद करो: 'नायकः' को 'नै + अकः' में तोड़ते हैं।

› पुष्टि करो: 'नै' में 'ऐ' और 'अकः' में 'अ' स्वर है। 'ऐ' के बाद 'अ' आने पर 'ऐ' का 'आय' हो जाता है।

› मिलाओ: 'न् + ऐ + अ + कः' 'न् + आय् + अ + कः' 'ना + य + कः' 'नायकः'।

उत्तर – नै + अकः = नायकः (अयादि सन्धि)

उदाहरण 8. शब्द 'वृक्षे + अपि' में सन्धि कीजिए।

› पहचानो: यहाँ पहले शब्द 'वृक्षे' के अंत में 'ए' स्वर है।

› पहचानो: दूसरे शब्द 'अपि' की शुरुआत में 'अ' स्वर है (और यह ह्रस्व 'अ' है)।

› नियम लागू करो: पूर्वरूप सन्धि के नियम के अनुसार, जब 'ए' के बाद ह्रस्व 'अ' आता है, तो 'अ' अवग्रह (ऽ) में बदल जाता है और 'ए' वैसा ही रहता है।

› सन्धि करो: 'ए' और 'अ' मिलकर 'एऽ' बन जाएँगे। 'वृक्षे' का 'ए' और 'अपि' का 'अ' मिलकर 'एऽ' हो जाएँगे।

› शब्द बनाओ: तो 'वृक्षे + अपि' मिलकर 'वृक्षेऽपि' बनेगा।

उत्तर – वृक्षेऽपि

उदाहरण 9. अगर शब्द 'विष्णू + इमौ' है, तो यहाँ कौन सी सन्धि होगी और क्या परिवर्तन होगा?

› पहला पद है 'विष्णू'। हमें देखना है कि यह किस प्रकार का शब्द है।

› यह 'ऊ' से अंत होने वाला द्विवचन का रूप है। संस्कृत में 'ऊद्' द्विवचन प्रगृह्य संज्ञक होता है।

› दूसरा पद है 'इमौ' जो एक स्वर (अच्) से शुरू हो रहा है।

› नियम के अनुसार, जब कोई प्रगृह्य संज्ञक वर्ण (जैसे 'विष्णू' का 'ऊ') हो और उसके बाद कोई स्वर (जैसे 'इमौ' का 'इ') आए, तो प्रकृतिभाव सन्धि होती है।

› प्रकृतिभाव सन्धि का मतलब है कि कोई बदलाव नहीं होता, शब्द जैसे हैं, वैसे ही लिखे जाते हैं।

उत्तर – तो 'विष्णू + इमौ' में कोई सन्धि नहीं होगी और यह 'विष्णू इमौ' ही रहेगा।

उदाहरण 10. उप + ओषति का सन्धि-पद क्या होगा?

› सबसे पहले पहचानो कि 'उप' एक उपसर्ग है और इसका अंतिम वर्ण 'अ' है।

› दूसरे शब्द 'ओषति' का पहला वर्ण 'ओ' है।

› नियम कहता है कि उपसर्ग के 'अ' के बाद 'ओ' आए तो 'अ' अपना रूप छोड़ देता है और 'ओ' ही शेष रहता है।

› तो 'उप् + अ + ओषति' मिलकर 'उप् + ओषति' यानी 'उपोषति' बनेगा।

उत्तर – उपोषति

उदाहरण 11. शब्द 'जगत्' + 'ईशः' को सन्धि करके बताइए।

› यहाँ पहला शब्द 'जगत्' का अंतिम वर्ण 'त्' है, जो एक व्यंजन है।
› दूसरा शब्द 'ईशः' का पहला वर्ण 'ई' है, जो एक स्वर है।
› व्यंजन सन्धि के नियम के अनुसार, जब व्यंजन के बाद स्वर आता है, तो व्यंजन में परिवर्तन होता है।
› यहाँ 'त्' अपने वर्ग के तीसरे वर्ण 'द्' में बदल जाएगा।
› तो, 'जगद्' + 'ईशः' मिलकर 'जगदीशः' बन जाएगा।

उत्तर – जगदीशः

उदाहरण 12. सन्धि करो: सत् + जन:

› यहाँ पहले पद का अंतिम वर्ण 'त्' (त वर्ग का) है और दूसरे पद का पहला वर्ण 'ज्' (च वर्ग का) है।
› नियम के अनुसार, 'त्' च वर्ग के 'ज्' में बदल जाएगा, क्योंकि 'त्' और 'ज्' दोनों अपने-अपने वर्ग के तीसरे अक्षर हैं।
› तो 'त्' की जगह 'ज्' आएगा।

उत्तर – सत् + जन: = सज्जन:

उदाहरण 13. उत् + डयनम् की सन्धि कीजिए।

› यहाँ 'उत्' का अंतिम वर्ण 'त्' (जो कि 'त' वर्ग का है) है।
› और उसके बाद 'डयनम्' का पहला वर्ण 'ड्' (जो कि 'ट' वर्ग का है) है।
› ष्टुत्व सन्धि के नियम के अनुसार, 'त' वर्ग का अक्षर 'ट' वर्ग के अक्षर में बदल जाएगा।
› क्योंकि 'त्' के बाद 'ड्' आ रहा है, तो 'त्' बदलकर 'ड्' बन जाएगा (त वर्ग का तीसरा अक्षर ड वर्ग का तीसरा अक्षर)।
› तो 'उत् + डयनम्' मिलकर 'उड्डयनम्' बन जाएगा।

उत्तर – उड्डयनम्

उदाहरण 14. सत् + धर्म:

› यहाँ पहले शब्द 'सत्' का अंतिम वर्ण 'त्' है। 'त्' त-वर्ग का पहला वर्ण है, यानी 'झल्' है।
› दूसरे शब्द 'धर्म:' का पहला वर्ण 'ध्' है। 'ध्' त-वर्ग का चौथा वर्ण है, जो 'झल्' के बाद आ सकता है।
› तो 'त्' अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण 'द्' में बदल जाएगा।
› अब 'द् + ध' मिलकर 'द्ध' बन जाएंगे।

उत्तर – सद्धर्म:

उदाहरण 15. उदाहरण हल करें: 'लभ् + स्यते'

› यहाँ 'लभ्' में 'भ्' प वर्ग का चौथा वर्ण है।
› उसके बाद 'स्यते' का 'स्' आ रहा है।
› नियम के अनुसार, 'भ्' अपने ही वर्ग के पहले वर्ण 'प्' में बदल जाएगा।
› तो 'लभ् + स्यते' बन जाएगा 'लप् + स्यते'।
› और मिलकर शब्द बनेगा 'लप्स्यते'।

उत्तर – लप्स्यते

उदाहरण 16. अनुस्वार सन्धि के अनुसार 'अहम् + पठामि' को जोड़ो।

› पहला शब्द है 'अहम्', इसके अंत में 'म्' है।
› दूसरा शब्द है 'पठामि', इसका पहला अक्षर 'प्' है, जो कि एक व्यंजन है।
› 'म्' के बाद व्यंजन आने पर 'म्' अनुस्वार (ं) में बदल जाता है।
› तो 'अहम्' का 'म्' अनुस्वार बन जाएगा और 'अहं' हो जाएगा।
› बाकी 'पठामि' वैसा ही रहेगा।

उत्तर – तो सन्धि करके बनेगा: अहं पठामि।

उदाहरण 17. 'कुं + ठितः' की सन्धि कीजिए।

› पहला कदम: हमें देखना है कि अनुस्वार (ं) के बाद कौन-सा अक्षर है। यहाँ 'ठ' है।

› दूसरा कदम: अब 'ठ' किस वर्ग का व्यंजन है? 'ट' वर्ग का। (ट, ठ, ड, ढ, ण)

› तीसरा कदम: 'ट' वर्ग का पंचम वर्ण कौन-सा है? 'ण' (अण)।

› चौथा कदम: तो अब अनुस्वार 'ं' की जगह 'ण्' लगा देंगे।

› पाँचवाँ कदम: शब्द बनेगा 'कुण्ठितः'।

उत्तर – कुण्ठितः

उदाहरण 18. शब्द 'विद्वान् + लिखति' की सन्धि करें।

› यहाँ पहले पद का अंतिम वर्ण 'न्' है।

› दूसरे पद का पहला वर्ण 'ल्' है।

› नियम के अनुसार, 'न्' के बाद 'ल्' आने पर 'न्' अनुनासिक 'लँ' में बदल जाता है।

› तो 'न् + ल्' मिलकर 'लँल्' बन जाएंगे।

उत्तर – इसलिए, 'विद्वान् + लिखति' का सन्धि रूप 'विद्वाँल्लिखति' होगा।

उदाहरण 19. सन्धि करें: 'परि + छेदः'

› यहाँ 'परि' में 'इ' ह्रस्व स्वर है।

› उसके बाद 'छेदः' का 'छ्' आया है।

› नियम कहता है कि ह्रस्व स्वर के बाद 'छ्' आने पर 'छ्' से पहले 'च्' का आगम होता है।

› तो, 'इ' + 'छ' के बीच 'च्' आ जाएगा।

उत्तर – परिच्छेदः

उदाहरण 20. शब्द 'पुनर् + रमते' का संधि कीजिए।

› यहाँ 'पुनर्' में अंत में 'र्' है और उसके ठीक बाद 'रमते' का पहला अक्षर भी 'र्' है।

› नियम के अनुसार, जब 'र्' के बाद 'र्' आता है, तो पहले वाले 'र्' का लोप हो जाता है।

› तो 'पुनर्' का 'र्' हट जाएगा, और उससे पहले वाला स्वर, जो 'पुन' में 'अ' है, वो दीर्घ हो जाएगा, यानी 'आ' बन जाएगा।

› इसलिए 'पुनर्' से 'पुना' बन जाएगा।

› और फिर इसे 'रमते' के साथ जोड़ देंगे।

उत्तर – पुना रमते

उदाहरण 21. नरा + नाम् को णत्व विधि से जोड़िए।

› यहाँ 'नरा' शब्द में 'र्' ध्वनि है।

› उसके बाद 'नाम्' का 'न्' है।

› नियम के अनुसार, 'ऋ', 'र्' या 'ष्' के बाद 'न्' होने पर 'न्' का 'ण्' हो जाता है।

› यहाँ 'र्' और 'न्' के बीच में 'आ' स्वर का व्यवधान है, जो 'अट्' प्रत्याहार में आता है। तो भी यह नियम लगेगा।

› इसलिए 'नरा + नाम्' में 'न्' बदलकर 'ण्' हो जाएगा।

उत्तर – नराणाम्

उदाहरण 22. बालकः + गच्छति का सन्धि करो।

› यहाँ पहले शब्द 'बालकः' में विसर्ग (:) है।

› दूसरे शब्द 'गच्छति' का पहला वर्ण 'ग' है, जो एक व्यंजन है।

› विसर्ग और 'ग' के मिलने से विसर्ग में परिवर्तन होगा। यहाँ यह विसर्ग 'ओ' में बदल जाएगा। (यह हम आगे 'रुत्व-उत्त्व' सन्धि में सीखेंगे)

› इसलिए, बालकः + गच्छति मिलकर 'बालो गच्छति' बनेगा।

उत्तर – बालो गच्छति

उदाहरण 23. सत्व सन्धि के नियमों का प्रयोग करके 'निः + चयः' का सन्धि करो।

› सबसे पहले हमने देखा कि यहाँ 'निः' में विसर्ग है।

› विसर्ग के ठीक बाद 'चयः' का पहला अक्षर 'च' है।

› अब हमें नियम याद करना होगा: जब विसर्ग के बाद 'च', 'छ' या 'श' आता है, तो विसर्ग 'श' में बदल जाता है।

› तो, ':' बदल गया 'श्' में।

› 'निः + चयः' बन गया 'निश् + चयः'।

उत्तर – निश्चयः

उदाहरण 24. 'दुः + परिणामः' का सन्धि करो।

› पहला कदम: देखो कि विसर्ग से पहले कौन सा स्वर है। 'दुः' में 'द्' के साथ 'उ' की मात्रा है, यानी 'उ' स्वर है।

› दूसरा कदम: देखो कि विसर्ग के बाद कौन सा वर्ण है। यहाँ 'परिणामः' का 'प' वर्ण है।

› तीसरा कदम: अब नियम लगाओ। विसर्ग से पहले 'उ' है और बाद में 'प' है, तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाएगा।

› चौथा कदम: शब्द को जोड़ो। 'दुष्' और 'परिणामः' मिलकर 'दुष्परिणामः' बन जाएगा।

उत्तर – दुष्परिणामः

उदाहरण 25. 'बालः + गच्छति' का सन्धि करो।

› पहला चरण: देखो, 'बालः' में विसर्ग से पहले 'अ' है (ल् + अ = ल)।

› दूसरा चरण: विसर्ग के बाद 'गच्छति' का पहला वर्ण 'ग' है। 'ग' अपने वर्ग (क वर्ग) का तीसरा वर्ण है, यानी यह एक घोष व्यंजन है।

› तीसरा चरण: नियम कहता है कि यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और बाद में घोष व्यंजन हो, तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

› चौथा चरण: तो, 'बालः' का विसर्ग 'ओ' बन जाएगा।

› पांचवा चरण: सन्धि करने पर 'बालो गच्छति' बनेगा। यहाँ 'ग' घोष व्यंजन है, 'अ' नहीं, इसलिए अवग्रह (ऽ) नहीं आएगा।

उत्तर – बालो गच्छति

उदाहरण 26. हरिः + आगच्छति

› पहचानो: यहाँ 'हरिः' में 'रि' में 'इ' स्वर है। यह 'अ' या 'आ' नहीं है।

› पहचानो: विसर्ग के बाद 'आगच्छति' का 'आ' एक स्वर है।

› नियम लागू करो: विसर्ग से पहले 'इ' है (जो 'अ'/'आ' नहीं है) और बाद में स्वर 'आ' है। इसलिए विसर्ग 'र्' में बदल जाएगा।

› जोड़ो: 'हरि + र् + आगच्छति'

› संधि करो: 'र्' में 'आ' मिलेगा तो 'रा' बन जाएगा।

उत्तर – हरिरागच्छति

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• सन्धि के उदाहरणों का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। बोर्ड परीक्षा में सीधा सन्धि विच्छेद या सन्धि युक्त पद बनाने को आता है।

• स्वर सन्धि के भेद और उनके नियमों को अच्छे से समझना बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इससे सीधे प्रश्न आते हैं।

• दीर्घ सन्धि, स्वर सन्धि का आधार है और बोर्ड परीक्षाओं में इसके बहुत सीधे और आसान उदाहरण आते हैं। बस समान स्वरों के मेल और उनके दीर्घ रूप को ध्यान से पहचानना है।

• गुण सन्धि के उदाहरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधे पूछे जाते हैं, जैसे 'देवेंद्रः' या 'राजर्षिः' का सन्धि विच्छेद। इन्हें अच्छे से अभ्यास कर लेना।

• वृद्धि सन्धि के उदाहरण बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर वे जहाँ 'ऐ' या 'औ' की मात्रा का स्पष्ट अंतर दिखाना होता है। इसे ध्यान से अभ्यास करें।

• यण् सन्धि के उदाहरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर 'स्वागतम्', 'यद्यपि', 'पित्रादेश:' जैसे शब्द। नियम को अच्छे से याद करके अभ्यास करना।

• अयादि सन्धि के उदाहरणों को पहचानने और उनका विच्छेद करने का खूब अभ्यास करना, क्योंकि यह बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछा जाता है।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछी जाती है, खासकर जब आपसे सन्धिविच्छेद या सन्धि पद बनाने को कहा जाए। अवग्रह चिह्न (ऽ) को देखकर तुरंत पहचान लेना कि यह पूर्वरूप सन्धि है और 'अ' की जगह आया है।

• बोर्ड परीक्षा में, ऐसे उदाहरण देकर पूछा जाता है कि यहाँ कौन सी सन्धि है या क्यों सन्धि नहीं हुई। ध्यान से पहचानना कि क्या शब्द प्रगृह्य संज्ञक (द्विवचन) है या प्लुत है, तभी आप सही उत्तर दे पाएंगे।

• यह नियम बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर वृद्धि सन्धि के भ्रम में गलत करवा दिया जाता है, इसलिए इसके उदाहरणों का खूब अभ्यास करें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यंजन सन्धि के कई उपभेद हैं और उन पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर 'त' वर्ग के परिवर्तन वाले उदाहरणों पर ध्यान देना, जैसे 'सत् + जन:' से 'सज्जन:'।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछी जाती है, खासकर इसके उदाहरण। नियमों को अच्छी तरह याद रखें और 'स' और 'त' वर्ग के परिवर्तन पर विशेष ध्यान दें।

• जश्त्व सन्धि बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके उदाहरणों का अभ्यास ज़रूर करें, खासकर 'दिग्गजः' और 'सद्धर्मः' जैसे शब्द।

• चर्त्व सन्धि के उदाहरणों को ध्यान से देखना और समझना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि परीक्षा में इन्हें पहचानने और सही विच्छेद करने पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं।

• अनुस्वार सन्धि से जुड़े उदाहरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधे प्रश्न बनकर आते हैं, इसलिए इसका नियम और उदाहरण ध्यान से देखना।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे पूछ ली जाती है, खासकर उदाहरण देकर सन्धि विच्छेद करने को या सन्धि करने को। इसके नियम और सभी वर्गों के पंचम वर्ण ज़रूर याद रखना।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षा में अक्सर उदाहरणों के रूप में पूछी जाती है, खासकर 'न्' वाला नियम, जिसमें अनुनासिक का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर 'च्' के आगम वाले उदाहरण कई बार पूछे जाते हैं। नियमों को अच्छे से याद रखना और उदाहरणों का अभ्यास करना!

• यह नियम बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके उदाहरण अक्सर संधि विच्छेद या संधि करने के प्रश्नों में आते हैं। 'नीरोगः' तो कई बार पूछा गया है।

• यह नियम बोर्ड परीक्षा में संधि विच्छेद और पद निर्माण दोनों में पूछा जा सकता है। उदाहरणों को ध्यान से देखना।

• विसर्ग सन्धि बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें सत्त्व, षत्त्व, रुत्त्व, उत्त्व, और विसर्ग लोप के नियमों को उदाहरणों के साथ अच्छे से याद करना।

• यह सत्व सन्धि बोर्ड परीक्षाओं में बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें 'नमः + ते = नमस्ते' जैसे उदाहरण कई बार पूछे जाते हैं, इसलिए नियम और उदाहरण दोनों अच्छे से याद कर लेना।

• षत्व सन्धि के अपवाद वाले नियम पर विशेष ध्यान दें, 'नमः' और 'पुरः' के उदाहरण सीधे बोर्ड परीक्षा में पूछे जाते हैं।

• यह सन्धि बोर्ड परीक्षा में अक्सर 2-3 नंबर के लिए आती है, खास करके अवग्रह (ऽ) वाले उदाहरण। 'सः + अवदत्' या 'बालः + अयम्' जैसे उदाहरण अक्सर पूछे जाते हैं।

• रुत्व सन्धि के उदाहरण बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं, खासकर जहाँ 'इ' या 'उ' के बाद विसर्ग हो। इन नियमों को अच्छे से याद रखना और उदाहरणों का खूब अभ्यास करना।

एक नज़र में रिवीज़न

› सन्धि = वर्ण-विकार; स्वर, व्यंजन, विसर्ग तीन प्रकार।
› दो स्वर वर्णों के मेल से परिवर्तन = स्वर सन्धि (अच् सन्धि)।
› समान स्वर मिलकर दीर्घ रूप लेते हैं (अ+अ=आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ, ऋ+ऋ=ॠ)।
› अ/आ + इ/ई = ए; अ/आ + उ/ऊ = ओ; अ/आ + ऋ = अर्
› अ/आ + ए/ऐ = ऐ; अ/आ + ओ/औ = औ (वृद्धि)
› इक् + असमान स्वर = यण् (इय्, उव्, ऋर्, लृल्)
› ए, ऐ, ओ, औ के बाद स्वर आने पर अय्, आय्, अव्, आव्।
› ए/ओ + ह्रस्व 'अ' = ए/ओ + ऽ (अवग्रह)
› प्रकृतिभाव = सन्धि नहीं, ज्यों का त्यों (प्रगृह्य/प्लुत + अच्)
› उपसर्ग 'अ' + 'ए'/'ओ' = 'ए'/'ओ' (अ का लोप)
› व्यंजन + स्वर/व्यंजन = व्यंजन में परिवर्तन
› स्/त वर्ग + श्/च वर्ग = स् श्, त वर्ग च वर्ग
› स् / त वर्ग + ष् / ट वर्ग ष् / ट वर्ग परिवर्तन
› झल् (1,2,3,4/श्,ष्,स्,ह्) + स्वर/3,4,5 वर्ण = जश् (3 वर्ण)
› चर्त्व सन्धि: 2,3,4 + 1,2/श्,ष्,स् = पहला वर्ण 1 में बदलेगा।
› पद के अंत में 'म्' + व्यंजन = 'म्' का अनुस्वार (ं)
› अनुस्वार + वर्गीय व्यंजन = बाद वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण
› त वर्ग + ल् = ल् (न के साथ अनुनासिक लँ)
› श् छ् (पूर्व वर्ग/रल् वह्); ह्रस्व स्वर + छ् च्छ्
› र् + र = पहले र का लोप, पूर्व स्वर दीर्घ।
› ऋ, र्, ष् के बाद 'न्' का 'ण्' एक ही पद में, व्यवधान सहित भी।
› विसर्ग के बाद स्वर/व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन विसर्ग सन्धि है।
› विसर्ग के बाद खर् वर्ण = स्, श्, ष् में परिवर्तन।
› विसर्ग से पहले 'इ/उ', बाद में 'क/ख/प/फ' = 'ष्' (नमः/पुरः अपवाद: 'स्')
› विसर्ग से पहले 'अ': 'अ + विसर्ग + अ' ओऽअ; 'अ + विसर्ग + घोष' ओ।
› विसर्ग से पहले 'अ'/'आ' नहीं, बाद में स्वर/घोष व्यंजन = विसर्ग का 'र्'